लाइटहाउस के लैम्प
को जलते रखना!
पीटर और कोनी रूप,
चित्र : पीटर ई. हैनसन
READING RAINBOW BOOK

लाइटहाउस के लैम्प को जलते रखना!

लेखकों का नोट

सदियों से, प्रकाशस्तंभों (लाइटहाउस) ने, नाविकों को तटीय खतरों से आगाह किया है. आज के लाइटहाउस के रखवालों के पास बिजली, रडार और रेडियो होते हैं जो उन्हें उनके महत्वपूर्ण कामों में मदद करते हैं. लेकिन बहुत पहले, साधारण लैम्प्स और समर्पित लाइटहाउस के रखवालों ने, कई जहाजों को खतरनाक चट्टानों से टकराने से बचाया था.

एब्बी बर्गेस और उसका परिवार 1853 में मेन के तट से दूर मैटिनिकस रॉक में चले गए. उसके पिता वहां के लाइटहाउस कीपर (रखवाले) बने. 19 जनवरी 1856 को, कैप्टन बर्गेस अपने परिवार के लिए दवाई और लैम्प्स के लिए तेल लाने के लिए लाइटहाउस से चले गए. जब वो गए तो उन्होंने एब्बी को लाइटहाउस का लैंप जलाने का काम सौंपा. उनके जाने के तुरंत बाद एक जबरदस्त तूफान आया जो चार सप्ताह तक चला. उस दौरान, एब्बी और उसकी बहनों ने अपनी बीमार मां की देखभाल की, और एब्बी ने लाइटहाउस के लैम्प्स को जलाए रखा.

एब्बी बर्गेस ने जीवन भर लाइट-हाउस की देखभाल करना जारी रखा. आज, उनकी कब्र पर एक छोटा सा प्रकाशस्तंभ बना है, जो मैटिनिकस रॉक पर बने प्रकाशस्तंभ का एक छोटा मॉडल है.

एब्बी की कहानी बहादुर प्रकाशस्तंभ रखवालों के इतिहास में प्रसिद्ध है. लैम्प्स जलाते रहो. यह कहानी एब्बी के अपने लेखों और अन्य ऐतिहासिक स्रोतों से मिली जानकारी पर आधारित है.
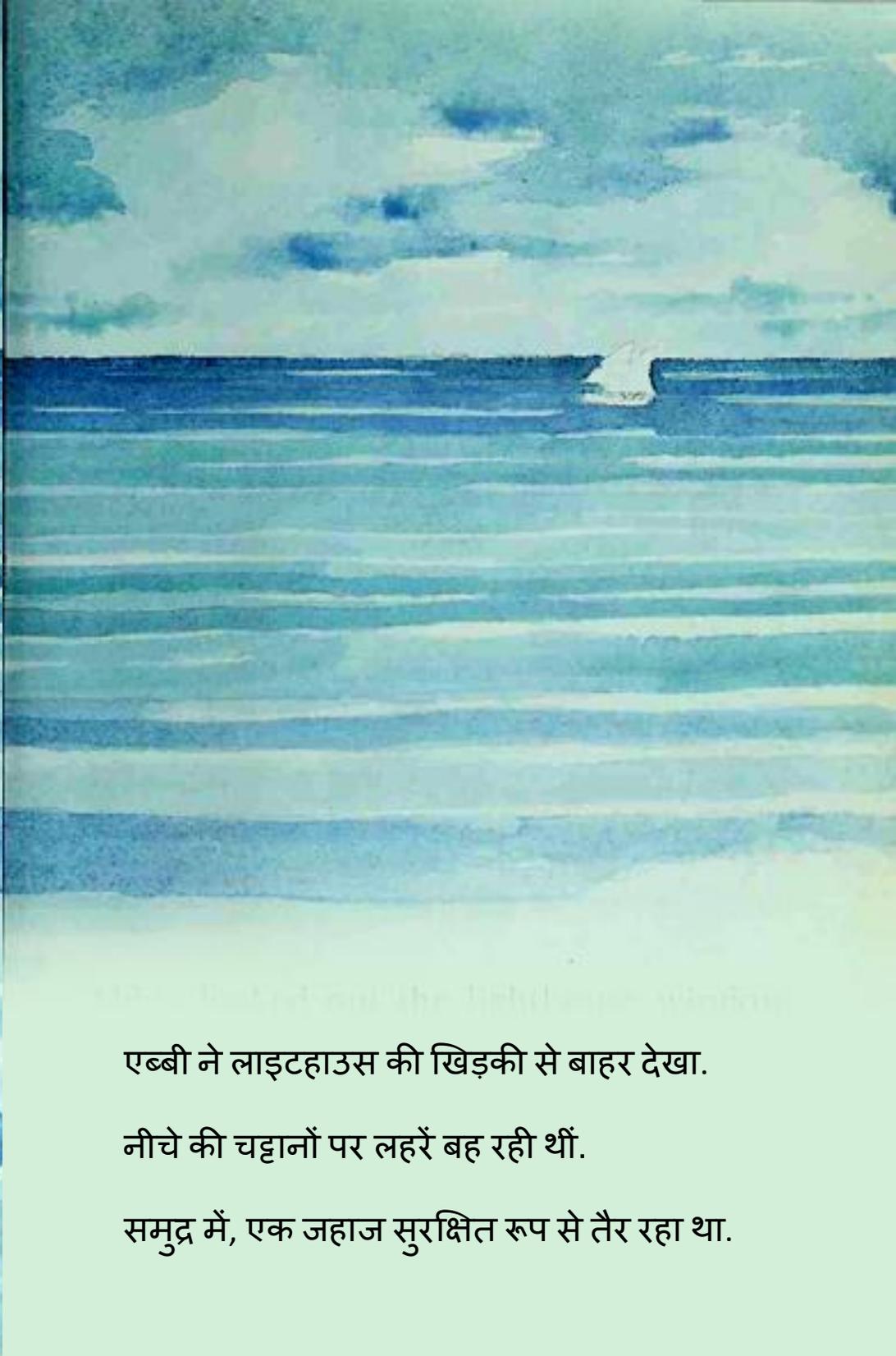
एब्बी ने लाइटहाउस की खिड़की से बाहर देखा.

नीचे की चट्टानों पर लहरें बह रही थीं.

समुद्र में, एक जहाज सुरक्षित रूप से तैर रहा था.

"क्या आप आज शहर जायेंगे, पापा?“

एब्बी ने पूछा.

"हाँ," कैप्टन बर्गेस ने उत्तर दिया.

"माँ को दवाई चाहिए.

लाइटहाउस के लैम्प्स को तेल की जरूरत है.

हमें भी भोजन चाहिए. आज मौसम अच्छा है.

इसलिए पफिन में बाहर जाना सुरक्षित होगा.”

"लेकिन अगर आप आज वापस नहीं

लौटे तो क्या होगा?" एब्बी ने पूछा.

"लाइटहाउस के लैम्प्स की कौन देखभाल करेगा?"

पापा मुस्कुरा दिए.

"तुम करोगी, एब्बी.”

"अरे नहीं पापा!" एब्बी ने कहा.

"मैंने वो काम कभी अकेले नहीं किया है."
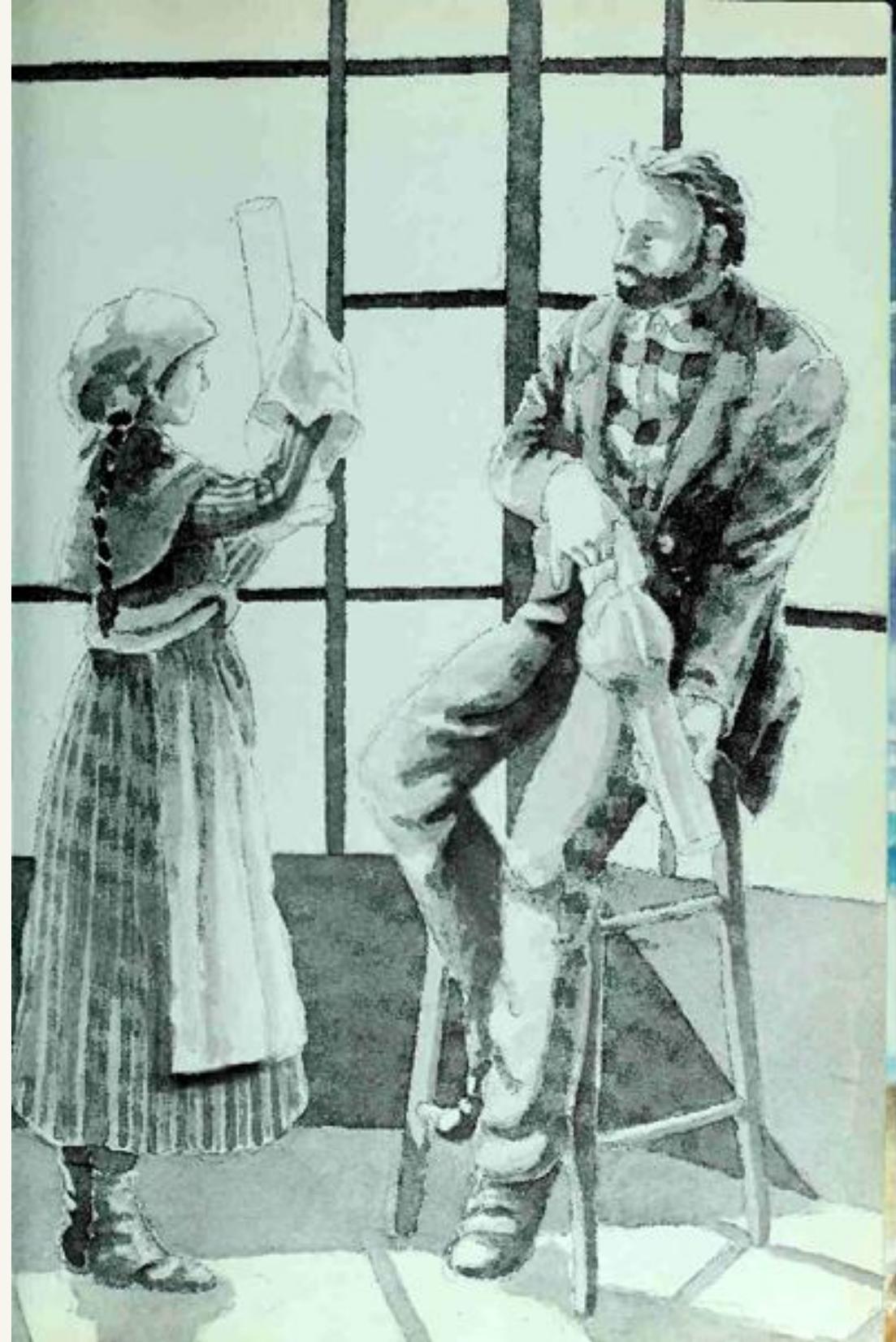
"तुमने पहले भी लैम्प्स की बत्तियों को काटा है,"

पापा ने कहा.

"तुमने लैम्प्स को साफ करके उसमें तेल भी डाला है.

माँ वो सब काम करने के लिए बहुत बीमार हैं.

और तुम्हारी बहनें अभी बहुत छोटी हैं.

तुम्हें लैम्प्स को जलते रखना चाहिए, एब्बी,

कई जहाज हमारे लाइटहाउस के भरोसे हैं."

एब्बी,पापा के पीछे-पीछे सीढ़ियों से नीचे उतरी.

अगर और कोई दिन होता तो वो दौड़कर गई होती.

लेकिन आज सुबह,

उसे अपने पैर बहुत भारी महसूस हुए.

एब्बी और पापा समुद्र के किनारे गए.

उनकी छोटी नाव, पफिन, अपनी रस्सी को खींच रही थी.

कैप्टन बर्गेस नाव में कूद पड़े.

उन्होंने पाल को उठाया.

फिर पफिन किनारे से दूर चली गई.

"लाइटहाउस के लैम्प्स को जलते रखना, एब्बी!"

उसके पिता ने कहा.

"मैं पूरी कोशिश करूँगी, पापा" एब्बी चिल्लाई.

लेकिन हवा उल्टी दिशा में थी. एब्बी के शब्द पिता तक नहीं पहुंचे.

एब्बी ने पफिन को समुद्र में जाते हुए देखा.

वो बहुत दूर स्थित मैटिनिकस द्वीप को देख सकती थी.

वह जानती थी कि उसके पापा एक अच्छे नाविक थे.

वो बारिश में नाव चला सकते थे.

वो कोहरे में भी नाव चला सकते थे.

लेकिन अगर आज हवा फिर से चली,

फिर वो आज मैटिनिकस रॉक

वापस नहीं लौट सकते थे.

छोटी नाव के लिए समुद्र की लहरें बहुत ऊँची होंगी.

फिर एब्बी को लाइटहाउस के प्रकाश की

देखभाल करनी होगी.

एब्बी ने ऊपर देखा.

दोनों प्रकाशस्तंभ की मीनारें,

आकाश के समान ऊंची लग रही थीं.
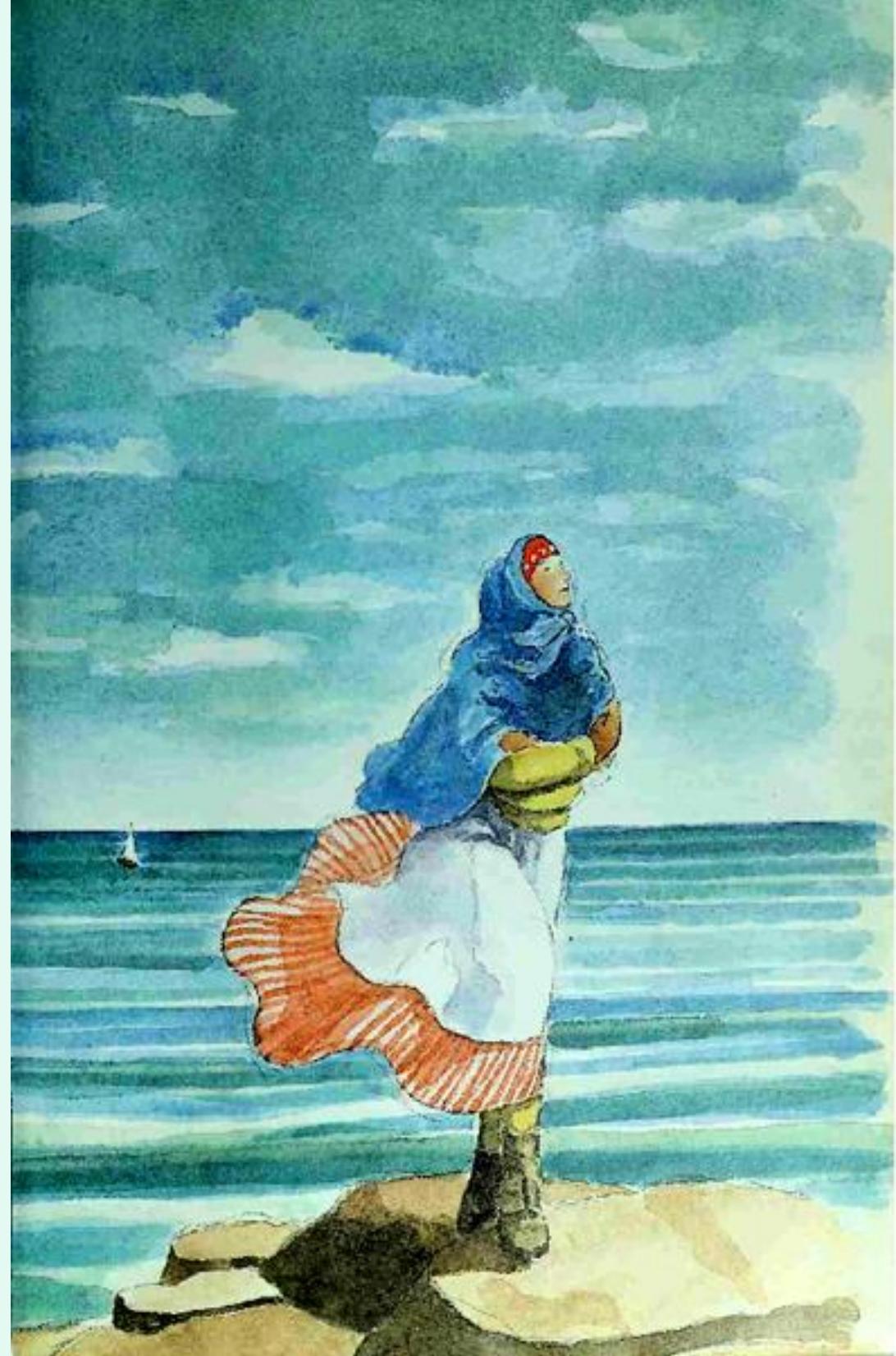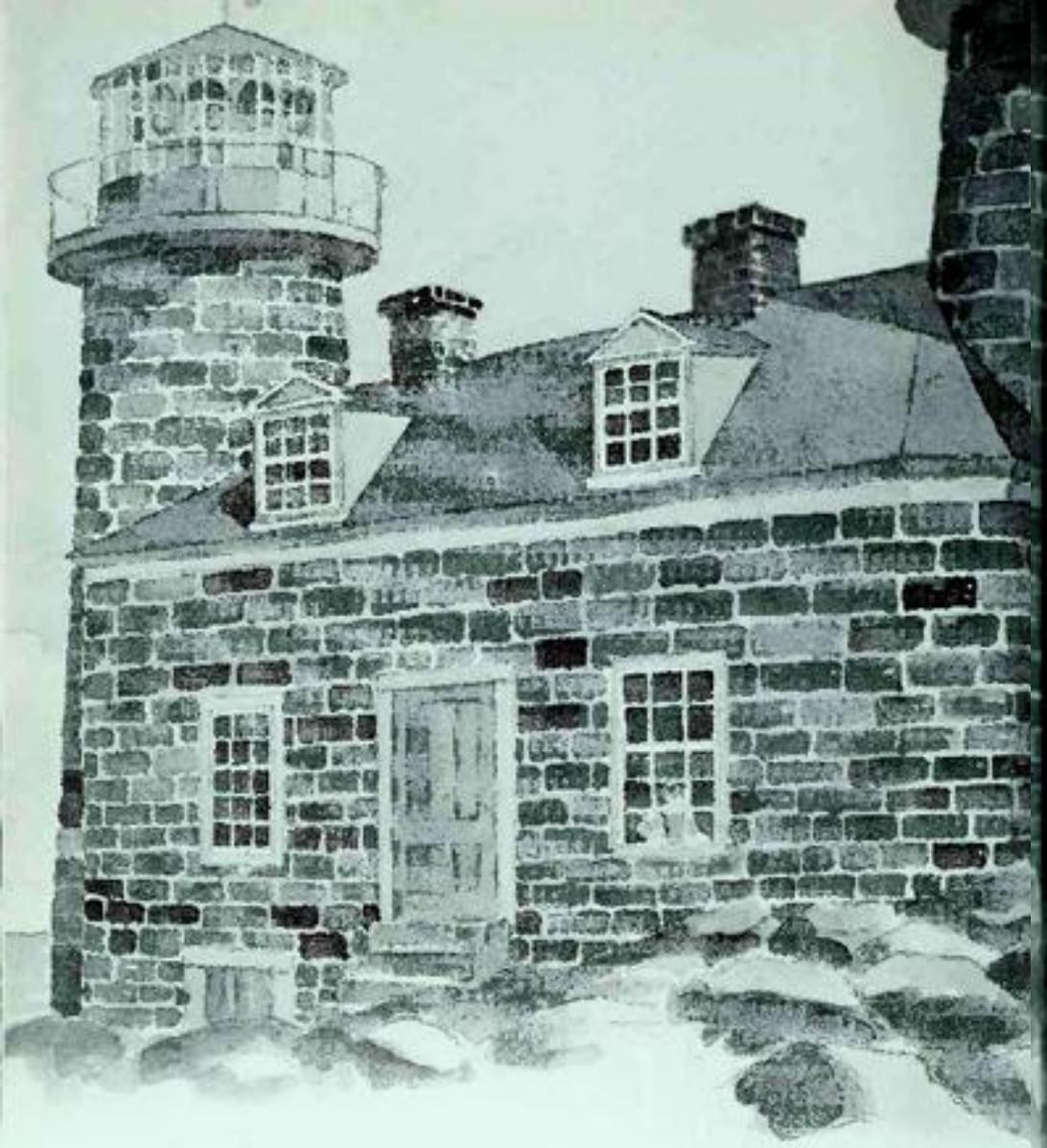
उसके परिवार का पत्थरों का बना घर

दोनों मीनारों के बीच स्थित था.

एब्बी का मुर्गी घर उससे कुछ दूर था.

एब्बी अपनी मुर्गियों को दाना खिलाने गई.

उसने मक्का के कुछ दाने जमीन पर फेंके.

भूखी मुर्गियाँ उसके पास दौड़ीं.

एब्बी एक चट्टान पर बैठ गई

और मुर्गियों को देखती रही.

"अब सुनो, होप, पेशेंस और चैरिटी," उसने कहा,

"दाने इतनी जल्दी मत खाओ.

क्योंकि अब ज्यादा मक्का नहीं बची है.

लेकिन पापा जल्द ही और मक्का लाएंगे,"

एब्बी ने आह भरी.

"मुझे आशा है कि वो आज शाम तक घर आ जायेंगे.

मुझे अकेले लाइटहाउस के प्रकाश की

देखभाल करने में थोड़ा डर लगता है."

फिर पेशेंस ने एब्बी के जूते पर अपनी चोंच मारी.

होप ने अपना सिर घुमाया.

चैरिटी ने अपने पंख फड़फड़ाए.

उन्हें देखकर एब्बी हँसी.

"तुम तीनों को देखकर मैं हमेशा बेहतर महसूस करती हूँ."

फिर एब्बी घर चली गई.

एस्थर ने दरवाज़ा खोला.

"पापा कब वापस आएंगे?" उसने पूछा.

"आज दोपहर को," एब्बी ने कहा.

"इस बीच अगर एक और तूफान शुरू हो गया,

तो क्या होगा?" महला से पूछा.

"चिंता मत करो," एब्बी ने अपनी बहिन से कहा.

"पापा जितनी जल्दी संभव होगा

उतनी जल्दी वापस आएंगे.

तुम दोनों दौड़कर मुर्गीघर से अंडे लाओ.

माँ कैसी हैं?" एब्बी ने अपनी बहन लिडा से पूछा.

"माँ बहुत बीमार हैं, वो उठ नहीं सकती हैं?"

लिडा ने उत्तर दिया.

"अच्छा हुआ पापा आज चले गए. माँ को दवा चाहिए.

और हमारे पास भोजन भी खत्म हो रहा है."

"तब हमें और सावधान रहना चाहिए," एब्बी ने कहा.

"अगर एक और तूफान आया तो पापा आज नहीं लौटेंगे.

हमें भोजन कम-कम खाना चाहिए."

उस दोपहर, एब्बी ने महला को पत्र लिखने में मदद की.

एस्थर ने रात के खाने में लिडा की मदद की.

सभी ने मिलकर माँ की देखभाल में मदद की.

बाहर आसमान काला हो गया.

हवा से लहरें सफेद दिखने लगीं.

सर्दियाँ वाला एक ओर तूफान आने वाला था.

एब्बी ने अपना कोट पहना.

उसे लाइटहाउस के लैम्प्स जलाने थे.
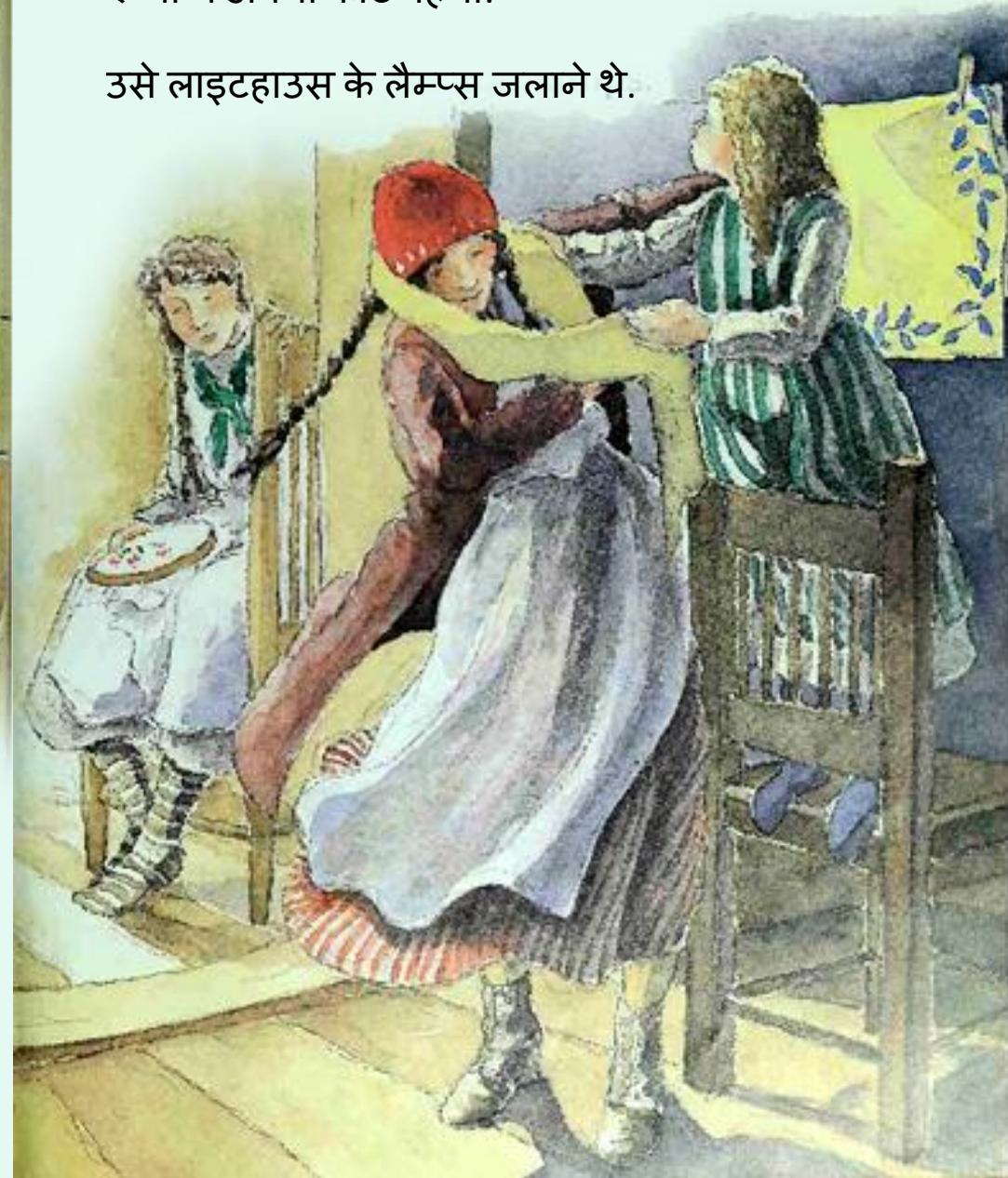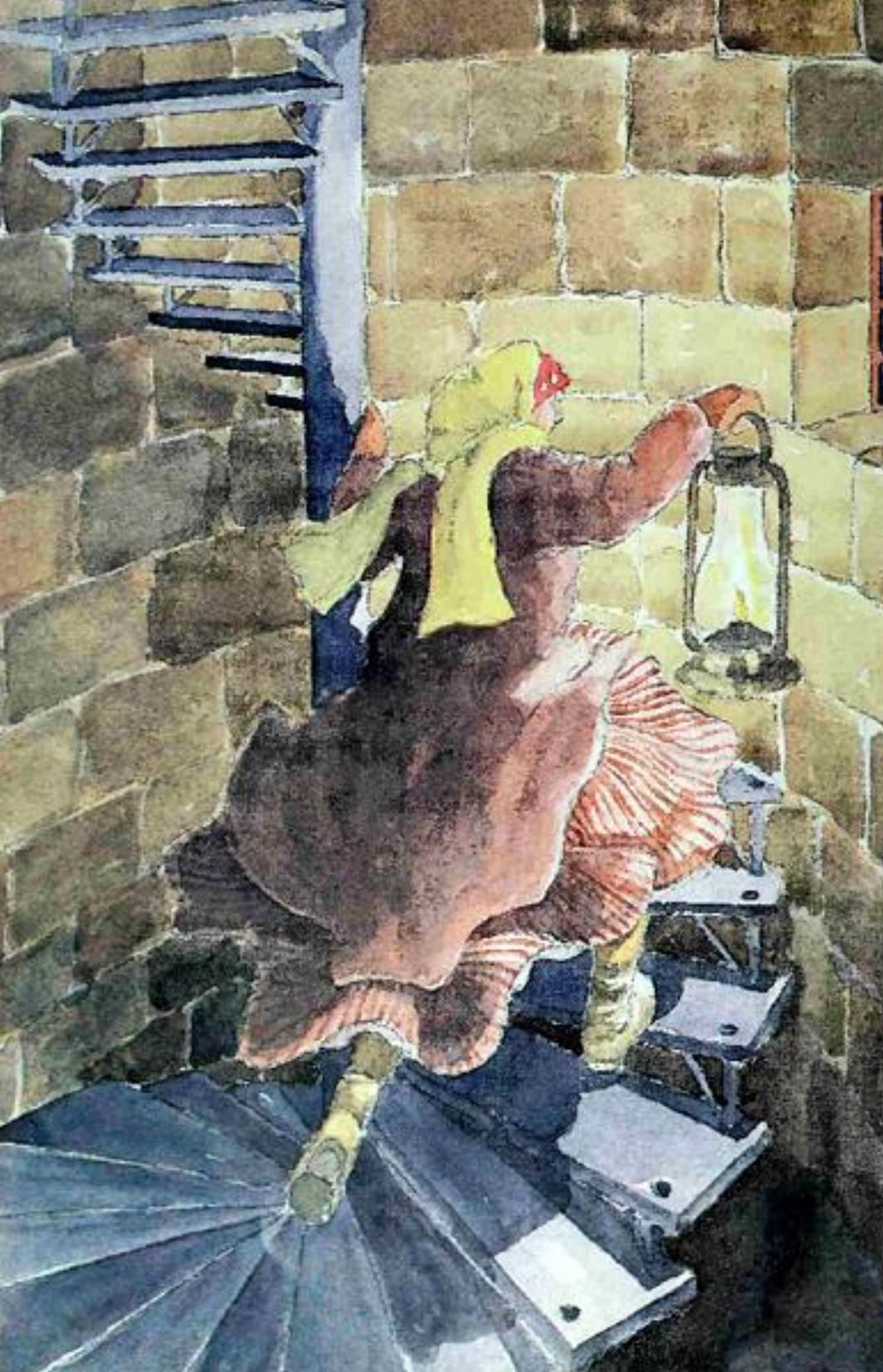
एब्बी प्रकाशस्तंभ की सीढ़ियाँ पर चढ़ी.

वो बाहर देखने के लिए कुछ देर ऊपर रुकी.

लहरें, बड़ी-बड़ी पहाड़ियों की तरह थीं.

हवा से खिड़कियों पर बारिश तेज़ी से उड़ रही थी.

अब मैटिनिकस द्वीप भी नहीं दिख रहा था.

वो जानती थी कि आज पापा वापस नहीं लौट सकेंगे.

एब्बी डर गई.

काश उसका भाई बेंजी घर पर होता.

लेकिन वो कहीं दूर मछली पकड़ने गया था.

क्या होगा अगर वो लाइटहाउस के

लैम्प्स को नहीं जला सकी?

एब्बी ने माचिस की डिब्बी उठाई.

उसके हाथ काँप रहे थे.

उसने एक तीली को मारा लेकिन वो फिसल गई.

उसने एक और तीली को मारा. तीली जल गई.

एब्बी ने तीली को पहले लैम्प की बाती के पास रखा.

बाती जल उठी.

प्रकाश को देखकर एब्बी ने बेहतर महसूस किया.

एक-एक कर उसने सारे लैम्प जलाए.

फिर वो दूसरे लाइटहाउस की टावर में गई.

उसने उन लैम्पों को भी जलाया.

दूर समुद्र में एक जहाज ने

लाइटहाउस की रोशनी देखी.

फिर वो जहाज़ खतरनाक चट्टानों से दूर चला गया.
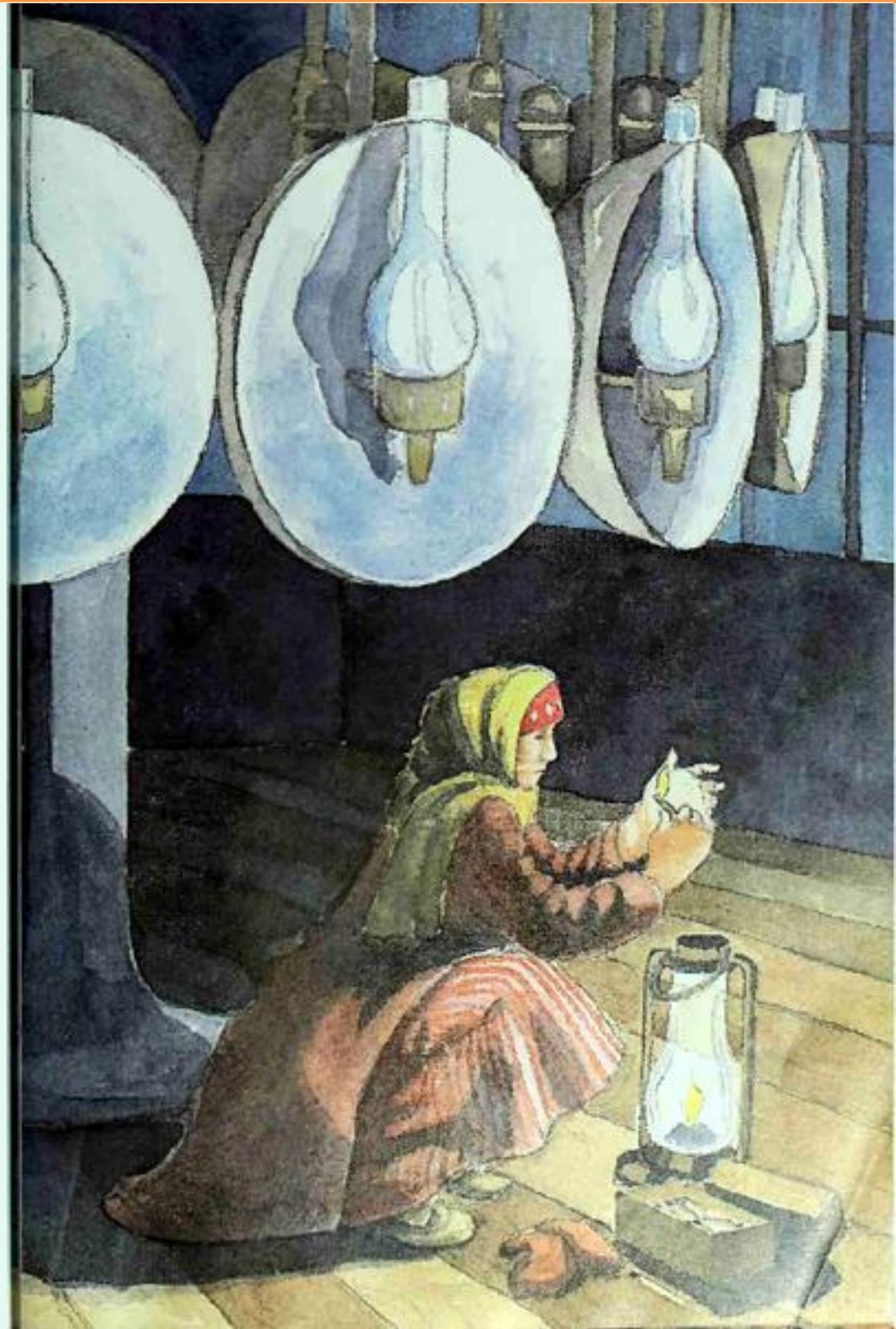
उस रात तेज हवा चली.

एब्बी सो नहीं सकी.

वो बार-बार प्रकाश के बारे में सोचती रही.

अगर वे बुझ गए, तो क्या होगा?

फिर कोई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो सकता था.

एब्बी बिस्तर से उठी.

उसने अपना कोट पहना.

वो लाइटहाउस की सीढ़ियों पर चढ़ी.

उसने वापिस आकर बहुत अच्छा किया.

लाइटहाउस की खिड़कियों पर बर्फ जम गई थी.

उसके कारण रोशनी दिखाई नहीं दे रही थी.

रात भर, एब्बी ऊपर-नीचे चढ़ती-उतरती रही.

उसने खिड़कियों पर जमी बर्फ हटाई.

उसने प्रत्येक लैम्प की जाँच की.

एक भी लैम्प बुझा नहीं था.

सुबह हुई. हवा अभी भी तेज़ थी.

मैटिनिकस रॉक के आसपास ऊंची लहरें थीं.

एब्बी ने एक-एक करके लैम्प बुझा दिए.

फिर उसने प्रत्येक बाती को तराशा.

उसने प्रत्येक लैम्प को साफ किया.

फिर उसने लैम्प में और तेल भरा.

उसके बाद वो नाश्ता करने गई.

और अंत में, वो बिस्तर में आकर लेटी.
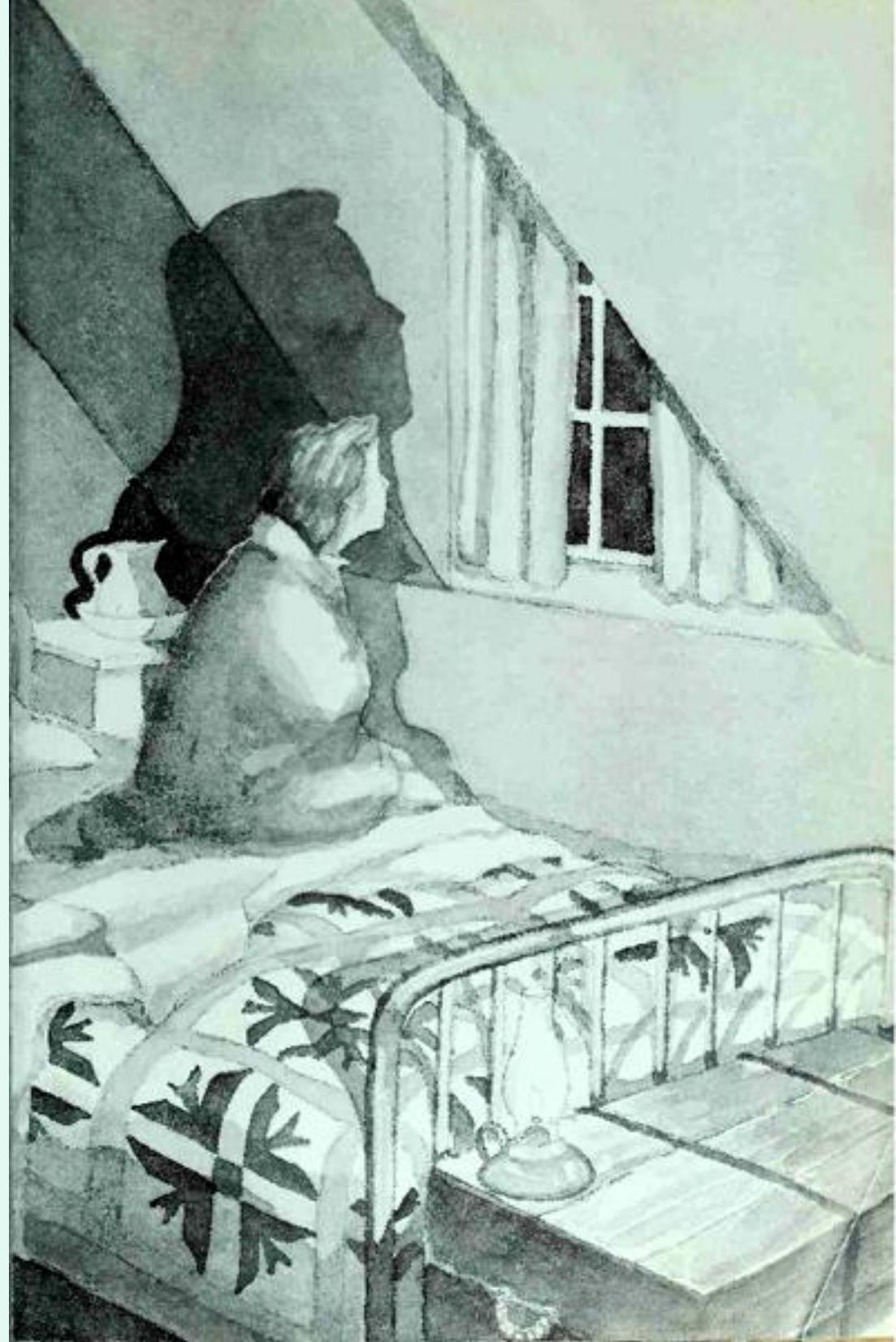
एक हफ्ते तक हवा और बारिश गरजती रही.

कुछ समय के लिए, परिवार को मजबूत

लाइटहाउस की एक मीनार में जाकर रहना पड़ा.

एक सुबह को दरवाजे के नीचे पानी बहने लगा.

"मेरी मुर्गियाँ!" एब्बी चिल्लाई.

उनकी धुलाई हो जाएगी."

"बाहर मत जाओ," लिडा ने कहा. "तुम भी बह जाओगी."

एब्बी ने एक टोकरी उठाई.

"मैं हर रात बाहर जाती हूँ," उसने कहा.

"मैं अभी तक पानी में नहीं बही हूँ."

उसने दरवाजा खोला.

कमरे में पानी छलक रहा था.

एब्बी बारिश में भागी.

वो मुर्गीघर की ओर दौड़ी.

उसने चैरिटी को अपनी बगल के नीचे पकड़ा.

फिर उसने होप और चैरिटी को टोकरी में धकेला.

तभी उसने एक और बड़ी लहर आने की आवाज सुनी.

लहर की आवाज़ एक ट्रेन की तरह लग रही थी!
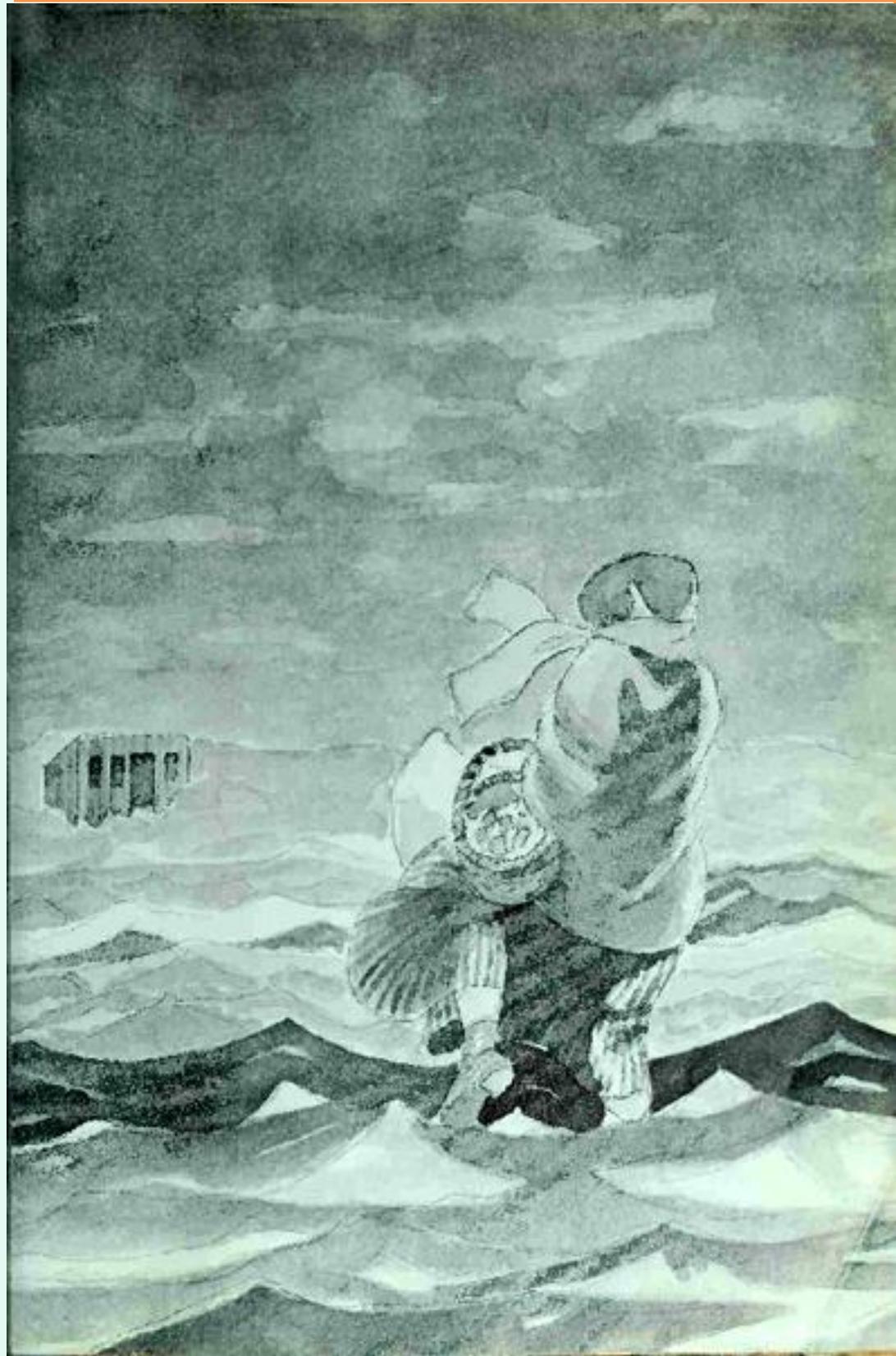
फिर एब्बी टावर की ओर दौड़ी.

"दरवाजा खोलो!" वो चिल्लाई.

लिडा ने दरवाजा खोला.

एब्बी अंदर भागी.

"अरे देखो!" महला रो पड़ी.

"वहाँ देखो! समुद्र अंदर आ रहा है!"

ऊंची लहर मैटिनिकस रॉक के ऊपर दुर्घटनाग्रस्त हो गई.

इसने मुर्गीघर को पूरी तरह से तबाह कर डाला.

लड़कियों ने धक्का देकर दरवाजा बंद कर दिया.

फिर लहर ने दरवाज़े पर धक्का मारा.

एब्बी ने लाइटहाउस को कांपते हुए महसूस किया.

एब्बी भी कांप रही थी. उसने ठीक समय पर दरवाजा बंद किया था.

हर दिन हिमपात या बारिश हुई.

एब्बी चाहती थी कि वो रुक जाए.

वो हवा से थक चुकी थी.

वो लहरों से थक चुकी थी.

वो लाइटहाउस की सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते थक गई थी.

और वो अंडे खा-खाकर थक गई थी.

खाने के लिए केवल अब सिर्फ अंडे ही बचे थे

और एब्बी उनसे ऊब गई थी.
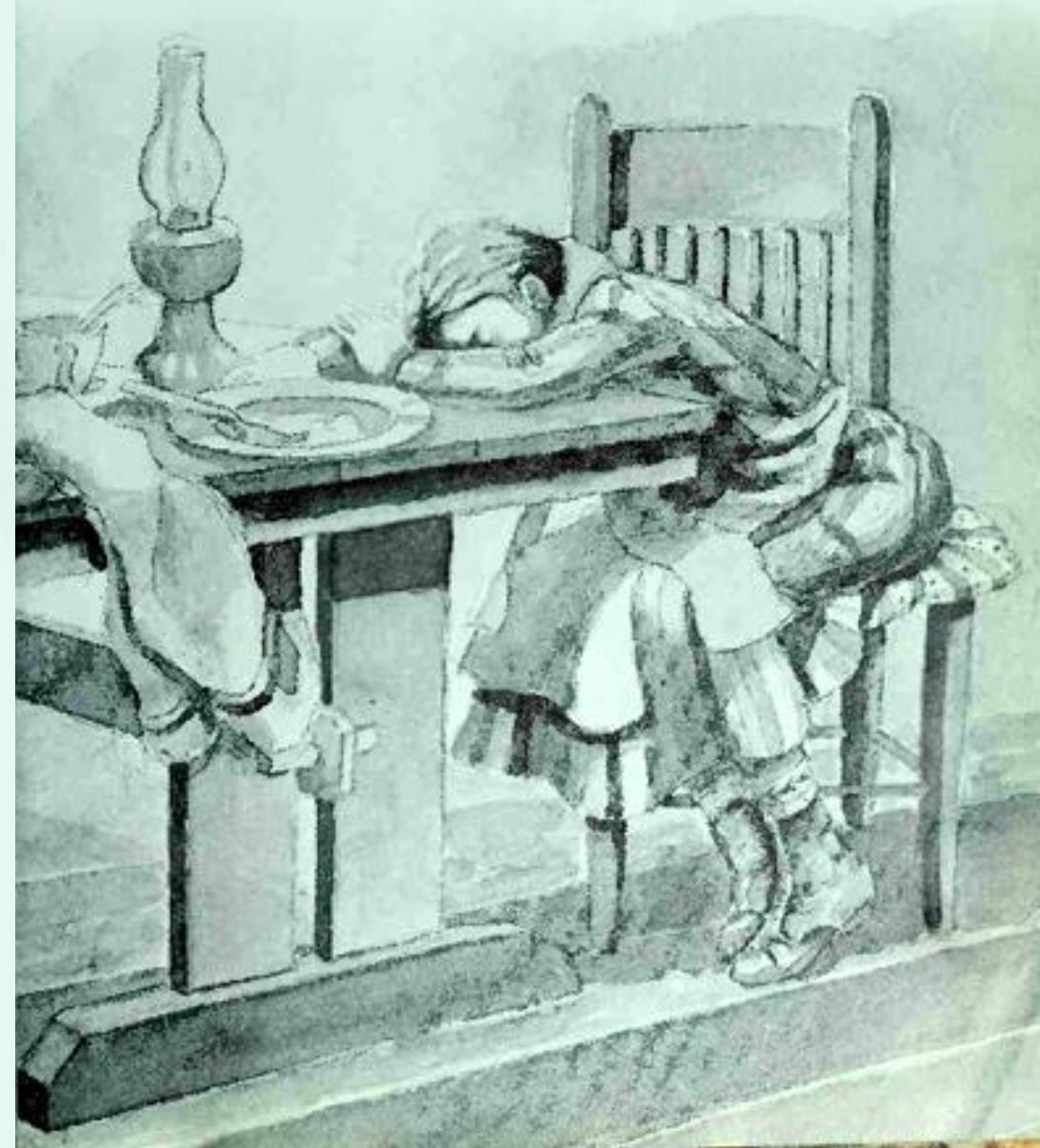
फिर एक सुबह, लहरें छोटी लगने लगीं.

आसमान भी इतना काला नहीं था.

हवा भी धीमी हो गई थी.

एक दिन देर शाम को लड़कियों ने

बाहर एक आवाज सुनी.

वो उनके पापा थे.

लड़कियां बक्सों को उठाने में मदद करने के लिए दौड़ीं.

माँ के लिए दवाएं थीं. लाइटहाउस के लैम्प्स के लिए तेल

था. डाक थी और खाना था.

और एब्बी की मुर्गियों के लिए मक्का थी.

"मुझे तुम्हारी बहुत फ़िक्र थी," पापा ने कहा.

"हर रात मैं लाइटहाउस के प्रकाश को देखता था.

और हर रात मैंने लैम्प्स को जलते हुए देखा.

तब मुझे पता चलता था कि तुम ठीक-ठाक हो."

एब्बी मुस्कुराई.

"मैंने लाइटहाउस के लैम्प्स को जलाए रखा, पापा."

समाप्त